ISSN 2349-9354

समीक्षा

समीक्षा एवं शोध त्रैमासिक

जुलाई–दिसंबर, 2015

संयुक्तांक

वर्ष-48 ● अंक-2-3

समीक्षा

समीक्षा एवं शोध त्रैमासिक

संयुक्तांक

जुलाई-दिसंबर, 2015

वर्ष 48, अंक 2-3

संस्थापक सम्पादक

गोपाल राय

सम्पादक

सत्यकाम

संयुक्त सम्पादक

अमिताभ राय

प्रबन्धन

सीमा

समीक्षा

ISSN : 2349-9354

जुलाई-दिसंबर, 2015

वर्ष: 48, अंक : 2-3

प्रकाशन तिथि : 15 दिसंबर, 2015

मूल्य :

एक प्रति: *तीस रुपये*

संस्थाओं के लिए : *पचास रुपये*

वार्षिक सदस्यता : *दो सौ रुपये (डाक खर्च सहित)*

संस्थाओं के लिए : *तीन सौ रुपये (डाक खर्च सहित)*

आजीवन सदस्यता : *पांच हजार रुपये (डाक खर्च सहित)*

इस अंक का मूल्य:

व्यक्तिगत: साठ रुपये

संस्था: सौ रुपये

सम्पर्क:

समीक्षा

द्वारा *अमिताभ राय*

ए-305, प्रियदर्शिनी अपार्टमेन्ट,

17-इन्द्रप्रस्थ प्रसार,

पटपड़गंज, दिल्ली-110092

मोबाइल : 09582502101

ईमेल : sameekshatraimasik@gmail.com

निवेदन: कृपया सारे भुगतान केवल बैंक ड्राफ्ट अथवा ई-ट्रांसफर द्वारा निम्न चालू खाता संख्या: 2257002100004645, IFSC Code : PUNB0225700, पंजाब नेशनल बैंक, इग्नू, मैदानगढ़ी, दिल्ली-110068 में कीजिए। बैंक ड्राफ्ट 'समीक्षा' को नई दिल्ली में देय होगा। ड्राफ्ट उपरोक्त पते पर भेजें।

पत्रिका का अंक न मिलने पर इसकी सूचना उपरोक्त पते पर दें अथवा उपर्युक्त नं. पर सम्पर्क करें।

'समीक्षा' में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। सम्पादक, संयुक्त सम्पादक पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायाधिकरण, दिल्ली होगा

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त।

ये कौन-सा बयार है...

दुखी हूँ, आहत हूँ, विचलित हूँ...

निजी तौर पर पिता को खोया। विगत 25 सितंबर 2015 को उनका देहांत द्वारका (दिल्ली) स्थित रॉकलैंड अस्पताल में सायं 9 बजकर 35 मिनट पर हुआ। अभी इतना ही... इससे ज्यादा लिखने की स्थिति में नहीं हूँ।

पिता क्यों याद आते हो बार-बार.....

बारम्बार

केवल दिया

कभी कुछ नहीं लिया

मांगा भी कुछ नहीं आपने

अपेक्षा थी बस इतनी

कि प्यार मिले

क्या वो भी मैं दे पाया

पता नहीं.....

अगला अंक (अक्टूबर-दिसंबर 2015) समीक्षा के संस्थापक संपादक गोपाल राय स्मृति अंक प्रकाशित होगा। गोपाल राय ने 'समीक्षा' की शुरूआत जुलाई 1967 में की थी और यह 47 वसंत पूरे कर 48वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। जब बाबूजी ने 'समीक्षा' का दायित्व मेरे ऊपर सौंपा था तो मैं खुद ही आश्वस्त नहीं था कि मैं उनके द्वारा स्थापित मानकों और विरासत को संभाल सकूँगा या नहीं। लेकिन मैं अपनी सीमित योग्यता के बल पर 'समीक्षा' का प्रकाशन जारी रख पा रहा हूँ इसके पीछे बाबूजी का आशीर्वाद और उनसे मिली प्रेरणा ही है। मुझमें कुछ नहीं, मैं तो उनका अंश मात्र हूँ। यह अंक बाबूजी देख नहीं पाएँगे इसकी कसक तो है। प्रो. गोपाल राय से 'समीक्षा' के माध्यम से जुड़े सभी लेखकों से अनुरोध है कि वे अगले अंक के लिए अपना योगदान दें।

मैं लगातार यह सोच रहा हूँ कि यदि आज बाबूजी होते तो वर्तमान स्थिति पर उनकी प्रतिक्रिया क्या होती ? बिल्कुल ठीक-ठीक तो नहीं कह सकता परंतु जितना मैं उनको जानता हूँ उससे इतना तो कह सकता हूँ कि देश में बढ़ती असहिष्णुता और हिंसा को लेकर वे भी दुखी, आहत और विचलित हुए होते।

भारतीय समाज में आरंभ से ही हिंसा और असहिष्णुता के विरोध में आवाजें उठती रही है। कबीर से लेकर आज तक के लेखकों ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई है। देश का साहित्यकार जो अमूमन उदारवादी और प्रगतिशील होता है वह समाज में सहिष्णुता स्थापित करने के लिए कटिबद्ध होता है। जब-जब असहिष्णुता के बादल घहराए हैं और अंधेरा छाने लगा है तब-तब लेखकों ने मशाल जलाई है और इस अंधेरे को दूर करने का प्रयत्न किया है।

आज एक बार फिर क्रोध, हिंसा, घृणा, असहिष्णुता, मुखर अभिव्यक्ति की घटती जगह लेखकों के लिए चिंता का विषय बन गया है और उन्होंने अपना सक्रिय प्रतिरोध दर्ज किया है। सत्ता को इसका सम्मान करना चाहिए और यह समझना चाहिए कि हमारा देश अहिंसा और सहिष्णुता को रेखांकित करने वाला देश रहा है। आज की स्थिति को देखते हुए ऐसा लगता है कि हम फिर मध्य युग की ओर लौट रहे हैं जो एक आधुनिक, सभ्य और विकास की ओर बढ़ते हुए राष्ट्र के लिए एक धक्का है। साहित्यकारों द्वारा लौटाया जा रहा सम्मान एक खतरे की घंटी है और यदि सत्ता इससे सचेत नहीं होती है तो यह उनके अस्तित्व के लिए ही खतरा है। हमारे समाज में स्याही, कालिख और हत्या के लिए कोई जगह नहीं है। आदरणीय प्रधानमंत्री ने महामहिम राष्ट्रपति के आह्वान पर ध्यान देने की अपील की है। राष्ट्रपति के बयानों से स्पष्ट है कि वे समाज में घटती सहिष्णुता के प्रति चिंतित हैं वे बार-बार देशवासियों से हिंसा का रास्ता न अपनाने की अपील कर रहे हैं। दुर्गा पूजा के अवसर पर उन्होंने कहा- "भारतीय सभ्यता अपनी सहिष्णुता के दम पर 5000 वर्ष तक अपना अस्तित्व कायम रख सकी। इसने सदा असंतोष और मतभेद को स्वीकार किया है... इस देश की राष्ट्रीय अखंडता का आधार सहिष्णुता है..